माध्यमिक स्तर पर प्रशिक्षित अध्यापकों की शैक्षिक अभिवृति, मूल्य एवं शिक्षण दक्षता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

शिक्षाशास्त्र विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वर नगर, दरभंगा

के अंतर्गत पी–एच0डी0 उपाधि हेतु उपस्थापित

शोध–प्रारूप

MD. IMBESATUL HAQUE
Assistant Professor
Dr.Z.H.T.T. College
L.Sarai, Darbhanga

Name of the Supervisor
Dr.Md.Imbesatul Haque
Address: Assistant Professor
Dr.Z.H.T.T.College,
L.Sarai, Darbhanga

Name of the Researcher
Pramod Sah
PAT Roll No.-22060310

पी–एच0डी0 शोध–प्रारूप

"माध्यमिक स्तर पर अध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति, मूल्य एवं शिक्षण दक्षता का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

➢ प्रस्तावना

शिक्षा को सदैव से ही समाज तथा राष्ट्र की प्रगति के एक महत्वपूर्ण तथा शक्तिशाली साधन के रूप में स्वीकार किया जाता है यही कारण है कि प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक सदैव ही शिक्षा को सामाजिक तथा राष्ट्रीय विकास की दृष्टि से एक सम्मान जनक स्थान दिया जाता रहा है।

अध्यापक राष्ट्र का निर्माता होता है, प्राचीन काल से ही सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक विकास में उसका विशेष योगदान रहा है। अध्यापकों में शिक्षार्थियों की आस्था होती है। विद्यार्थियों के व्यवहार परिमार्जन में अध्यापक का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षक को भारतीय परम्पराओं में 'गुरू' शब्द से संबोधित किया जाता है, गुरू शब्द में 'गु' अंधकार का प्रतीक है तथा 'रू' ज्ञान के लिए होता है, इस प्रकार गुरू का शाब्दिक अर्थ अंधकार से प्रकाश की तरफ ले जाने वाला। गुरू अपने ज्ञान से शिष्य को पुष्पित व पल्लवित करता है। चूँकि अध्यापक कालजयी होता है जो वह न्यायाधीश की तरह निष्पक्ष, संयासी की तरह निर्भीक, चिकित्सक की तरह सेवक, सेनापति की तरह साहसी, साधू की तरह उदार, माता की तरह दानी तथा पिता की तरह शुभेच्छु होता है। इस तरह अध्यापक का व्यक्तित्व पारदर्शी तथा स्पष्ट होना चाहिए। उसे झूठ, सच, न्याय, अन्याय, उचित–अनुचित में समझौता न करते हुए नीर क्षीर विवेकी होना चाहिए।

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य समाज की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुरूप बालक के व्यवहार को परिमार्जित करना है व्यवहार के विभिन्न अवयवों मे अभिवृत्ति अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा विचार के प्रति व्यक्ति किस प्रकार का व्यवहार करेगा यह उस व्यक्ति की उनके प्रति बनी अभिवृत्ति पर निर्भर करता है व्यवहार ही नहीं, व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यक्तित्व भी उसकी अभिवृत्तियों के अनुकूल ही निर्मित होता है, जो कुछ भी व्यक्ति सीखता है और आदतों तथा रूचि आदि को ग्रहण करता है वह सभी उसकी अभिवृत्तियों द्वारा प्रभावित होता है। अतः एक अध्यापक को अभिवृत्ति के अर्थ एवं प्रकृति उनके निर्माण और विकास संबंधी तथ्य और उनकी मापन विधाओं से अच्छी तरह परिचित होना आवश्यक है, साथ ही शिक्षण में नवाचारों व नवीन शिक्षण विधियों के द्वारा शिक्षण को प्रभावी बनाने का कार्य शिक्षक कर सकते है, क्योकि प्रत्येक शिक्षक में शिक्षण के प्रति सृजनात्मक चिंतन होता है जो कि शिक्षण कौशलों पर सार्थक प्रभाव डालता है इन सभी का ही परिणाम शिक्षण में सृजनात्मकता है, शिक्षण व्यवसाय में एक शिक्षक की सफलता एवं असफलता उसकी शिक्षण योग्यता, शिक्षण कुशलता, शिक्षण कौशल, शिक्षण अभिवृत्ति एवं शिक्षण सृजनात्मकता पर निर्भर करती है।

अध्यापक का अमूल्य धन उसका स्वाभिमान होता है। उसे संयम, चिंतन, सम्यक दृष्टिकोण स्नेह तथा उदारता आदि गुणों से युक्त होना चाहिए। शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंगों में अध्यापक छात्र व पाठ्यवस्तु में अध्यापक का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। श्रेष्ठ अध्यापकों के अभाव में सुयोग्य छात्रगण अच्छी पाठ्यवस्तु होते हुए भी वांछित ज्ञानार्जन में सफ़ल नहीं हो सकते हैं। इस प्रकार से अच्छी से अच्छी पाठ्यवस्तु भी निपुंण अध्यापकों की अनुपस्थिति में प्राणहीन हो जाती है। अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया

को उचित दिशा प्रदान करते हैं। अच्छे अध्यापक छात्रों को वांछित व्यवहार परिवर्तन में सहायता प्रदान करते हैं, तथा सर्वांगीण विकास के पथ पर सफलतापूर्वक आगे बढ़ने में सहायक सिद्ध होते हैं । शिक्षा व्यवस्था किसी भी प्रकार की क्यों न हो उनमें अध्यापक की भूमिका सर्वोपरि होती है।

स्वतंत्रता के उपरान्त अध्यापक प्रशिक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ। शिक्षा के संदर्भ में अनेक आयोग गठित हुए जिनके द्वारा अध्यापक प्रशिक्षण में अनेक सुधार हेतु ठोस सुझाव प्रस्तुत किये गये, जिनसे अध्यापकों में गुणवत्ता का विकास हो सका। अध्यापक शिक्षा के गुणवत्ता स्तर को यदि शैक्षिक दृष्टि से देश के शैक्षिक संस्थानों में कार्यरत तथा भावी अध्यापक वर्ग की कार्यकुशलता एवं दक्षता को पुष्ट करने के लिए उन्हें मानवीय शैक्षिक संसाधन के रूप में विकसित करना होगा, जिससे भावी राष्ट्रीय नागरिकों का निर्माण संबंधित दायित्व एवं कर्त्तव्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक माना जाता है।

➢ शोध कार्य की आवश्यकता एवं महत्व

अध्यापक शिक्षा की महत्ता को अतिप्राचीन काल से ही महत्व दिया जाता रहा है। प्राचीन काल तथा मध्यकाल में अध्यापक योग्यता को एक जन्मजात तथा प्रकृति प्रदत्त योग्यता स्वीकार किया जाता था। उस समय सामान्यजन की यह अवधारणा थी कि अध्यापक बनने वाला व्यक्ति जन्म से ही अध्यापन संबंधी योग्यता से सम्पन्न होता है। उस समय की मान्यता थी कि अध्यापक तैयार नहीं किया जाता वरन् ईश्वर प्रदत्त गुणों से पैदा होता है। 19वीं सदीं के उत्तरार्द्ध तथा 20वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में विश्व के लगभग सभी देशों में अध्यापक के जन्मजात होने संबंधी मान्यता का खंडन किया जाने लगा तथा धीरे–धीरे सभी देशों में यह स्वीकार किया जाने लगा कि प्रशिक्षण देकर श्रेष्ठ व सुयोग्य अध्यापक तैयार किये जा सकते हैं। अब

अध्यापक प्रशिक्षण पर विशेष जोर दिया जाने लगा जिसके लिए सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ–साथ व्यवहारिक अभ्यास भी विशेष आवश्यक है।

किसी भी अध्यापक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह उन बालकों को अच्छी तरह समझे जिन्हें उसे पढ़ाना है या पढ़ा रहा है। आज विश्व में बाल केन्द्रित शिक्षा होने के कारण यह आवश्यक है कि, "अध्यापक छात्रों की रूचि, ज्ञान, योग्यता, क्षमता आदि को अच्छी तरह जान लें।" उनके मनोविज्ञान को जाने उनके अभिवृद्धि व विकास को जाने, उनकी आवश्यकताएँ क्या है? कैसे सीख सकते हैं? सीखने के लिए कैसे प्रेरित किया जा सकता है? बालकों में अपेक्षित अभिवृत्ति व मूल्यों को कैसे विकसित किया जा सकता है, उनके संवेगों को कैसे नियंत्रित, परिवर्तित व संशोधित किया जा सकता है और अन्त में बालकों का सर्वांगीण विकास कैसे किया जा सकता है।

➢ संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

तिकाम्नी (1970), गुजरात राज्य के प्राथमिक शिक्षकों के गुणात्मक विकास के लिए शिक्षक, शिक्षाविद्, प्रधानाध्यापक और प्राथमिक शिक्षकों की राय लेने के पश्चात् भविष्य में प्राथमिक स्कूल शिक्षक प्रशिक्षक कार्यक्रम में उनके योगदान का मूल्यांकन किया और सुझाव दिया कि ये बच्चों के विकास और उनके महत्व को समझ सकते हैं, नये उपकरणों का ज्ञान और शिक्षण तकनीकी, उपकरणों का मूल्यांकन और मापन प्रशिक्षणार्थियों को दिया जाना चाहिए। यह भी सुझाव दिया कि छात्राध्यापकों को विषयोन्मुखी बनाया जाना चाहिए।

गुप्ता (1980), ने कालेज शिक्षा में सेवापूर्व शिक्षकों का सर्वेक्षण किया। ये सभी सर्वेक्षण शिक्षा के गुणात्मक पहलुओं के निराशाजनक तस्वीर से चिंतित थे। पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों और पर्याप्त सुविधाओं का

अभाव प्रमुख निष्कर्ष था। अब तक गुणवत्तापरक मानकों और शैक्षिक मानकों के कमजोर पड़ने के साथ समझौता करने के कारणों को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।

हेमाम्बुजम (1983), ने माध्यामिक स्तर पर अध्यापक शिक्षा का एक सर्वेक्षण किया और पाया कि राज्य सरकार सभी शिक्षक प्रशिक्षकों की भर्ती को नियंत्रित करता है। आरक्षण के आधार पर चयन किया जाता है। शिक्षक प्रशिक्षकों की सेवा सुरक्षित थी और उनके वेतन का सीधे भुगतान किया जाता था और यह पाया कि विद्यालयों के वित्तीय संसाधनों में ट्यूशन फीस, विशेष फीस शामिल होती है जिसे प्रशिक्षणार्थी अदा करता है।

मोहन्ती (1997), ने एन0सी0टी0ई0 के कार्य की विवेचना किया और उन्होंने पाया कि अधिकांशतः प्रशिक्षण संस्थान एक सत्र में 2 से 3 महीने के लिए ही कार्यरत रहते हैं, एन0सी0टी0ई0 ने एक मानक 180 दिन का समय एक सत्र के लिए निर्धारित किया। फिर भी अधिकतर माध्यमिक शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थान इसे गम्भीरता से नहीं लेते हैं। इसलिए उन्होंने यह सुझाया कि एन0सी0टी0ई0 के मानक संस्थानों पर कड़ाई से लागू होने चाहिए।

चक्रवर्ती (1998), में जब शिक्षकों की गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण पर जोर दे रहे थे, तब उन्होंने बताया कि देश में शिक्षक–प्रशिक्षण बदलाव के नये आयामों को छू रहा है तथा अन्तर्राष्ट्रीय मानकों को पूर्ण कर रहा है, नये पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या देश की नई आवश्यकताओं के हिसाब से बनाये जा रहे हैं एवं लागू किये जा रहे हैं।

सोरेन्सन (1977), के अनुसार, "अभिवृत्ति किसी वस्तु के प्रति एक विशिष्ट भावना है इसलिए इसमें उस वस्तु (चाहे वह व्यक्ति, विचार या पदार्थ कुछ भी हो) से जुड़ी हुई परिस्थितियों में एक निश्चित प्रकार के

व्यवहार करने की प्रवृत्ति निहित होती है। यह आंशिक रूप में तार्किक और आंशिक रूप में संवेगात्मक होती है। तथा किसी भी व्यक्ति में जन्मजात न होकर उपार्जित होती है।"

➢ **शोध के उद्देश्य**

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित उद्देश्य होंगेः–

- अध्यापकों के शिक्षण–व्यवहार के स्वरूपों का अध्ययन करना।
- अध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति के बारे में अध्ययन करना।
- अध्यापकों के उनके मूल्यों तथा शिक्षण दक्षता को ज्ञात करना।
- लिंग के आधार पर पुरूष एवं महिला अध्यापकों के शिक्षण प्रभाविकता का अध्ययन करना।
- लिंग के आधार पर अध्यापकों के शैक्षिक अभिवृत्ति, मूल्य एवं शिक्षण दक्षता का अध्ययन करना।

➢ **शोध की परिकल्पना**

- अध्यापकों के शिक्षण–व्यवहार के स्वरूपों में कोई सार्थक अंतर नही पड़ेगा।
- अध्यापकों के शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नही पड़ेगा।
- अध्यापकों के उनके मूल्यों तथा शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नही पड़ेगा।
- लिंग के आधार पर पुरूष एवं महिला अध्यापकों के शिक्षण प्रभाविकता में कोई सार्थक अंतर नही पड़ेगा।
- लिंग के आधार पर पुरूष एवं महिला अध्यापकों के शैक्षिक अभिवृत्ति, मूल्य एवं शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नही पड़ेगा।

➢ शोध से संबंधित प्रश्न

- क्या माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के मध्य शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति, मूल्य एवं शिक्षण–दक्षता में सार्थक अंतर है?
- क्या माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के मध्य शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति, मूल्य एवं शिक्षण दक्षता में सार्थक अंतर है?
- क्या माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के मध्य शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति, मूल्य एवं शिक्षण–दक्षता में सार्थक अंतर है?
- क्या ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्यापकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति, मूल्य एवं शिक्षण–दक्षता में सार्थक अंतर है?
- क्या ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति, मूल्य एवं शिक्षण–दक्षता में सार्थक अंतर है?
- क्या शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्यापकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति, मूल्य एवं शिक्षण–दक्षता में सार्थक अंतर है?
- क्या शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति, मूल्य एवं शिक्षण–दक्षता में सार्थक अंतर है?

➢ शोध अध्ययन का सीमाकंन

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में दरभंगा जिला में स्थित माध्यमिक विद्यालय से सम्बद्ध अध्यापकों तक सीमित रखा जायेगा।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में दरभंगा जिला में स्थित माध्यमिक स्तर पर अध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति, मूल्य एवं शिक्षण दक्षता तक सीमित रखा जायेगा।

➢ शोध अध्ययन के चर

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्तमान समस्या का अध्ययन करने के लिए तीन चरों का चयन किया जायेगा, जो इस प्रकार है – शैक्षिक अभिवृत्ति, मूल्य एवं शिक्षण दक्षता।

➢ न्यादर्श

न्यादर्श को प्रतिनिधि न्यादर्श कहा जाता है। वह जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में अध्यापक पर अध्ययन किया जायेगा।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में दरभंगा जिला में स्थिति माध्यमिक विद्यालयों का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा किया जायेगा। उक्त संस्थानों में कार्यरत अध्यापकों को न्यादर्श के रूप में चयन करने हेतु यादृच्छिक चयन विधि का प्रयोग किया जायेगा। न्यादर्श के रूप में 200 पुरूष अध्यापक एवं 200 महिला अध्यापक से संबंधित होंगे। इस प्रकार कुल 400 अध्यापकों पर वर्तमान अध्ययन किया जायेगा।

➢ शोध के उपकण व तकनीकी

शोध विधि–"विधि केवल अमूर्त प्रत्यय है जैसे तार्किक चिन्तन में हम विषय एवं प्रविधि को पृथक कर सकते हैं। वास्तव में एक क्रमिक अशेष बनाते हैं, जिसमें विशेष विधि को उसी प्रकार निर्धारित करता है, जैसे उद्देश्य साधन एवं अर्न्तवस्तु को निर्धारित करता है तथा शुद्ध साहित्य में लेखन शैली एवं व्यवहार को निर्धारित करता है।

प्रस्तुत शोध में अध्यापकों में शैक्षिक अभिवृत्ति, मूल्य एवं शिक्षण दक्षता के मापने हेतु निम्नलिखित शोध उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा :–

1. शैक्षिक अभिवृत्ति मापनी
2. व्यक्तिगत मूल्य मापनी (जी0पी0 शेरी एवं आर0पी0 वर्मा द्वारा निर्मित)

3. शिक्षण दक्षता मापनी (स्वनिर्मित।

➢ शोध अध्ययन विधि

माध्यमिक स्तर पर अध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति, मूल्य एवं शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए वर्तमान शोध अध्ययन में "वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि" का प्रयोग किया जायेगा।

➢ आंकड़ा संग्रह विधि/ विश्लेषण की विधि

शोध अध्ययन साक्षात्कार के आधार प्राप्त आँकड़ों को व्यस्थित तालिका के आधार पर विश्लेषण किया गया है। साथ ही तथ्यों का वर्गीकरण आँकड़ा विश्लेषण विधि के अनुरूप करने की चेष्टा की जायेगी तथा Mean, Standard derivative एवं t-test का उपयोग किया जायेगा।

➢ शोध अध्याय

प्रस्तुत शोध मतबंध में निम्न अध्याय होंगे :–

प्रथम अध्याय	–	परिचय
द्वितीय अध्याय	–	संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन
तृतीय अध्याय	–	शोध विधि एवं तकनीक
चतुर्थ अध्याय	–	आँकड़ों का विश्लेषण
पंचम् अध्याय	–	निष्कर्ष एवं सुझाव
		संदर्भ ग्रन्थ सूची

➢ संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, जी0के0 (2002), समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा0लि0, आगरा
2. एस0आर0 श्रीवास्तव (1982), जॉब सैटिस्फैक्शन एमंग प्राइवेट एण्ड पब्लिक सेकेंडरी स्कूल टीचर्य परस्पेक्शिव इन साइकोलोजिकल रिसर्च

3. मौर्य, एच.सी. (1990), विश्वविद्यालय और पूर्व विश्वविद्यालयीन व्याख्याताओं की शैक्षिक दक्षता, व्यक्ति और अभिवृत्ति के बीच संबंध के अध्ययन का प्रयास, पी.एच.डी. शोध, आगरा विश्वविद्यालय
4. भावना (2005), देवी पाटन के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की ऊर्जा शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारकों एवं योग्यता व्यक्तित्व विशेषताओं के संबंध का अध्ययन, शोध प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद
5. पुनीत वशिष्ठ (2005), केन्द्रीय विद्यालय के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन
6. पुरोहित, अर्चना (2009), अध्यापक शिक्षा में मूल्यांकन प्रणाली : समीक्षा एवं सुझाव, शाह गोवर्द्धनलाल काबरा शिक्षक महाविद्यालय, जोधपुर
7. भटनागर, सुरेश व कुमार, संजय (2005), "भारत में शिक्षा का विकास," आर. लाल बुक डिपो, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ
8. पाण्डेय, रामशक्ल (2005), "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक," विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

शोधार्थी

Pramod Sah.